उच्च शिक्षा व्यवस्था: ई-शिक्षा एंव ई-लर्निंग शिक्षा के बढ़ते महत्व का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा नगर के उच्च शिक्षण संस्थान के विशेष संदर्भ में)

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा

समाजशास्त्र विषय के अंतर्गत पीएच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

प्रिया पाल

पर्यवेक्षक

प्रोफेसर लजवन्त सिंह

समाज विज्ञान संकाय, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान विभाग,

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग, आगरा - 282005

2022

प्रस्तावना

आधुनिक समय में हम यह देख रहे हैं कि शिक्षा लगभग ई-शिक्षा का रूप लेती जा रही है। तथा यह समाज में लगातार होने वाले परिवर्तनों में से एक है। जिसमें आज देशभर में महामारी कोरोना वायरस (2019) के कारण उच्च शिक्षा व शिक्षा की व्यवस्था अस्त-व्यस्त सी हो गई थी। वहीं अगर हम यह देखें तो ई-शिक्षा के माध्यम से आज हर उस क्षेत्र में शिक्षा को व्यवस्थित व सुचारू रूप से संचालित किया जा सकता है जिसमें कई प्रभाव आज हमको देखने को भी मिल रहें है तथा ई- लर्निंग शिक्षा से दूरसंचार प्रौद्योगिकी का उपयोग है कि शिक्षा और उसके साथ वैश्विक संचार और इंटरनेट से संपर्क की गति, वेब सामग्री उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक समृद्ध और अधिक आकर्षित हो रही है तथा निश्चित रूप से हमने ज्ञान प्राप्त करने के तरीको को बदल दिया है। सीखना अब पहले जैसा सीमित नहीं रही है प्रत्येक स्तर कि कक्षा में ई-लर्निंग को भविष्य के रूप में देखा जाने लगा है। दुनिया भर में यह सीखने को बढ़ावा भी दे रहा है सीखने वालों को कभी भी और कहीं भी सीखने के सक्षम बनाया जा रहा है। जो ई-लर्निंग के उपयोग को प्रभावित करता है और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म अनुसंधान का क्षेत्र भी बनता जा रहा है यह शिक्षण और अनुसंधान के ध्यान के योग्य है इसके प्रमुख केंद्र शिक्षण संस्थान रहे हैं उनके कार्यान्वयन के लिए भारी मात्रा में संसाधनों का निवेश भी किया जा रहा है। हालांकि पारंपरिक ई-लर्निंग के तरीके का उपयोग किया जाता है प्रबंधन सामग्री और शिक्षण प्रदान कर सकते है तथा विद्यार्थीयों के हित को बनाए रखने के लिए आवश्यक प्रक्रियाएं भी सीख सकते है। परिणामस्वरूप कई प्रकार के ई-लर्निंग सुविधाएं भी शुरू हो रही है ऑनलाइन ई-लर्निंग पारंपरिक के लिए एक प्रभावी विकल्प यह भी है जिसमें आमने-सामने की शिक्षा व उपस्थित स्कूली शिक्षा की तुलना में, वेब-आधारित शिक्षा एक महान परिवर्तन करने जा रही है, शिक्षण और सीखने की विधि मे कई संस्थाएं छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए ई-लर्निंग वातावरण को लागू कर रहे हैं। चूंकि ई-लर्निंग इंटरनेट और दुनिया का उपयोग करके ई-शिक्षा को आयोजित किया जा रहा है ई-लर्निंग का माहौल और इससे निहितार्थ शोध में शिक्षकों के लिए चुनौती पर प्रकाश डाला गया है विकासशील शब्दों में जागरूकता और पहचान इन कारकों का प्रबंधन करने के लिए रणनीति तैयार

की जा रही है शिक्षा की एक केंद्रीय भूमिका सभी से लैस करने के प्रस्तावों सहित ई-लर्निंग के लिए पहचान की गई और सीखने की पहुंच के लिए कौशल और संसाधनों वाले छात्रों के अवसर को साझा ज्ञान एक समय पर कई जगह उनकी जीवन शैली में फिट बैठ रहा है। वह एकीकृत ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म माना जाता है।

शिक्षा और शिक्षण गतिविधियों के आधार पर अच्छा तरीका ज्ञान प्रबंधन,एक एकीकृत ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म को प्रस्तुत करता है और शैक्षिक प्रक्रिया में भाग लेना ही आज की ई-लर्निंग के सामने आने वाली कई चुनौतियों का जवाब भी हैतथा लक्ष्य का निर्माण करना व व्यापक शिक्षण, अनुसंधान, सेवा, नवाचार के एकीकरण के माध्यम से नेटवर्क इंटरैक्शन प्लेटफॉर्म स्कूल और शिक्षण के बाहर, अनुसंधान, देश, उद्योग, नीति, मांग और अन्य डिजिटल संस्थानों में सीखना और मल्टीमीडिया नेटवर्किंग के साथ-साथ शैक्षिक उनके व्यापक अनुप्रयोग क्षेत्र में सीखने का माहौल कक्षा से परे है तथा ई-लर्निंग संस्कृति की स्थापना को आवश्यक भी माना जाता है उच्च शिक्षा का भविष्य और लंबे जीवन की सुविधा हैं जिसमें हम ई-लर्निंगशिक्षा का अवलोकन प्रस्तुत करते है। ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म की एक तस्वीर पेश करने के लिए विश्वविद्यालयों और छात्रों के दृष्टिकोण का ई-लर्निंग वातावरण इसकी ओर, महत्वपूर्ण जांच के लिए एक सर्वेक्षण किया गया था जिसमें ई-लर्निंग में शिक्षार्थियों को प्रभावित करने वाले कारक वातावरण मे ई-लर्निंगशिक्षा को सकारात्मक रूप से ज्ञान में इसके लचीलेपन को प्रभावित करते हैं प्रबंधन, समय प्रबंधन और व्यापक पहुंच जानकारी व इसके अलावा, एक एकीकृत ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, कई वेब-आधारित, मल्टी-प्लेटफॉर्म टूल प्रदान करते हुए, पेश किया जाता है ज्ञान प्रबंधन पर आधारित, सूचकांक की शर्तें- ई-लर्निंग, इंटीग्रेटेड प्लेटफॉर्म, मे लगातार होने वाले परिवर्तन मे भी है।

भूमंडलीकरण में ई-लर्निंग की भूमिका - शिक्षा के भूमण्डलीकरण से तात्पर्य केवल संसार के विभिन्न देशों में एक-दूसरे से शैक्षिक विचारों के आदान-प्रदान और एक देश से दूसरे देश में जाकर शिक्षा प्राप्त करने से ही नहीं होता अपितु एक-दूसरे देश में अपने शैक्षिक संस्थान स्थापित करने से भी होता है

वैश्वीकरण शिक्षार्थियों के ज्ञान का उपयोग करनेए आकलन करने, अपनाने और लागू करने की क्षमता को बढ़ाते हुए उचित निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र रूप से सोचने और दूसरों के साथ सहयोग करने के लिए नई

स्थितियों की समझ बनाने के लिए वैश्वीकरण वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से ई शिक्षा को लगातार विकसित हो रही है

वैश्वीकरण ने दुनिया को मौलिक रूप से बदल दिया है। लेकिन इसने विशेष रूप से विश्व अर्थव्यवस्था को बदल दिया है जो तेजी से अंतर जुड़े और अंतर निर्भर हो गई है। लेकिन इसने विश्व अर्थव्यवस्था को तेजी से प्रतिस्पर्धी और अधिक ज्ञान आधारित बना दिया, जो विशेष रूप से विकसित पश्चिमी देशों में इसका प्रयोग लगातार बड़ रहा है

वैश्विक शिक्षा पर्यावरणीय स्थिरता के अंतर्राष्ट्रीय विकास को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ वैश्विक उद्योगों को मजबूत करने की दिशा में योगदान देने के लिए दुनिया भर की प्रणालियों से शिक्षण के तरीकों को आपस में जोड़ती है। ये शैक्षिक पहल प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक स्कूल तक वैश्विक पहुंच को प्राथमिकता देती है जो सीखने के अनुभवों को प्रेरित करती हैं तथा छात्रों को बहुराष्ट्रीय नेतृत्व वाली भूमिकाओं के लिए तैयार करती है। शिक्षा वैश्विक स्थिरता के लिए नींव के रूप में कार्य करती है इसलिए कम उम्र से ही बहुसांस्कृतिक जागरूकता का विकास विभिन्न समाजों से जुड़ी विचारधाराओं को एकीकृत कर सकता है ताकि दुनिया भर के मुद्दों के बारे में अच्छी तरह से संतुलित निष्कर्ष पर पहुंच सकें। वैश्वीकरण और शिक्षा तब सफल भविष्य के लिए युवा लोगों को तैयार करने के आपसी लक्ष्यों के माध्यम से एक दूसरे को प्रभावित करने के लिए आते हैं जिसके दौरान उनके राष्ट्र तेजी से जुड़े होंगे। वैश्वीकरण के साथ ज्ञान शिक्षा और सीखने की कुछ चुनौतियाँ आज के शिक्षार्थियों को अमूर्त अवधारणाओं और अनिश्चित स्थितियों के साथ अधिक परिचित और आरामदायक होने की क्षमता प्रदान करेंगी।

वैश्वीकरण अंतरिक्ष और समय की सीमाओं को तोड़ता है। उन्नत सूचना और संचार तकनीकों का उपयोग करते हुए ज्ञान शिक्षा और सीखने की एक नई प्रणाली में समकालिक और अतुल्यकालिक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला लागू होनी चाहिए जो शिक्षक और छात्र को अंतरिक्ष और समय की सीमाओं को तोड़ने में सहायता करती है।

परिभाषा:

वून के अनुसार (2005)- ई-लर्निंग में कभी भी, कहीं भी सुविधाएं और इसलिए पाठ्यक्रम, संरचना और शिक्षण तरीकों का एक महत्वपूर्ण प्रभाव है ।

गुरी-रोसेनब्लिट के अनुसार (2005)– "ई-लर्निंग विभिन्न प्रकार से सीखने के उद्देश्यों के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग किया है" पारंपरिक कक्षाओं में ऐड-ऑन फंक्शंस से लेकर ऑनलाइन मीटिंग्स के लिए पूर्ण प्रतिस्थापन भी किया है।

ब्राण्डोल हाल के शब्दों में– जब अनुदेश का संचार आंशिक या पूर्ण रूप से विद्युत यंत्रों के माध्यमों की सहातया से तथा वेबसाइट व इण्टरनेट अथवा बहु माध्यमों सी.डी रोम से किया जाता है। वेबसाइट ई.अधिगम के लिए वातावरण का सृजन करतीहै।

टॉम कैली तथा सिसको के अनुसार– ई-अधिगम द्वारा अधिसूचना सम्प्रेषण की सहायता से शिक्षा तथा प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण की क्रियाओंछात्र के अधिगम एवं प्रशिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख नहीं किया जाता है। छात्र की आवश्यकताओं के अनुकूल ज्ञान तथा कौशल उत्तम ढंग से प्रदान किया जाता है

लार्मिन सारक्वाटस के शब्दों में- ई-अधिगम के उपयोग एवं प्रक्रिया का व्यापक क्षेत्र है जैसे- वेब आधारित अधिगम कम्प्यूटर आधारित अधिगम तथा वास्तविक कक्ष शिक्षण को शामिल किया जाए। दृश्य एवं श्रव्य सैटेलाइड प्रसारण में दूरदर्शन सी.डी रोम का उपयोग किया जाता है।

रोसनवर्ग के अनुसार- ई-अधिगम में इण्टरनेट प्रणाली का उपयोग किया जाता है। इण्टरनेट तकनीकी से पाठ्यवस्तु का संचार किया जाता है जिससे ज्ञान में वृद्धि की जाती है और छात्रों की निष्पत्तियों में वृद्धि होती है।

ई-शिक्षा- ई-अधिगम या ई-शिक्षा का पूरा नाम इलेक्ट्रॉनिक अधिगम से है। वास्तव में यह कम्प्यूटर प्रोत्साहित सीखने से है। इस दृष्टि से ई-अधिगम को अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रत्यय का सीधा सम्बन्ध प्रगतिशील अधिगम तकनीकी से अधिक है। इस दृष्टि से ई-अधिगम में तकनीकी तथा सीखने

की विधियों को सम्मिलित किया जाता है। इसमें कम्प्यूटर नेटवर्क तथा बहुमाध्यम तकनीकी का उपयोग किया जाता है। इस दृष्टि से ई-अधिगम शिक्षा का एक नवीन प्रत्यय है जो परम्परागत अधिगम से बिल्कुल भिन्न प्रकार है। इसमें अधिगम की नए ढंग से सीखने या व्यवस्था करने की रचना भी की गई है। ई-अधिगम में सर्वाधिक इण्टरनेट का उपयोग करते हैं और अधिगम के वातावरण को विस्तृत रूप में भी समझाया जाता है। इण्टरनेट की सहायता से अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को अधिगम वातावरण के लिए गम्भीरता से विस्तृत किया जाता है। यह वातावरण विद्यार्थियों को केन्द्र मानकर निर्मित किया जाता है परन्तु इसके विपरीत परम्परागत शिक्षा में अधिगम वातावरण अध्यापक केन्द्रित होता है अर्थात ई-अधिगम में पाठ्यवस्तु के सम्बन्ध में जो कुछ बताया जाता है वह छात्रों की ओर से होता है। इस दृष्टि से शिक्षा का यह नवीन प्रत्यय बहुत उपयोगी माना जाता है क्योंकि यह जीवन पर्यन्त शिक्षा के लिए परिस्थितियाँ तथा वातावरण को बना देती है। इसलिए विद्यार्थी अपनी शिक्षा को लम्बे समय तक जारी रखते हैं। वे अधिगम को बीच से छोड़कर नहीं जाते हैं अर्थात् शिक्षा से पलायन की प्रवृत्ति सदैव के लिए समाप्त हो जाती है।

ई-शिक्षा और ई-लर्निंग का अर्थ: ई शिक्षा या इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस लर्निंग का अर्थ होता है एजुकेशन, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस और डिजिटल मीडिया होने के साथ-साथ इसके अंतर्गत चाहे पारम्परिक कक्षा कक्ष हो या बुनियादी तकनीकी इत्यादि का इस्तेमाल किया जाता हो, तब शिक्षा ई-शिक्षा कहलाती है। जिसमें ई-शिक्षण पर आधारित एक शिक्षण प्रणाली लेकिन इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की मदद से ई-लर्निंग शिक्षण के रूप में जाना जाता है। जबकि यह कार्य शिक्षण कक्षाओं में या उससे बाहर हो सकता है, कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग ई-लर्निंग का प्रमुख घटक है। ई-लर्निंग को कौशल और ज्ञान के एक नेटवर्क सक्षम हस्तांतरण के रूप में भी कहा जा सकता है, और शिक्षा का वितरण बड़ी संख्या में प्राप्तकर्ताओं को एक ही या अलग-अलग समय व स्थानों पर किया जाता है

हालांकि, ई-लर्निंग में तेजी से प्रगति और शिक्षण प्रणालियों में प्रगति के साथ, यह अब कंप्यूटरों का परिचय इस एक नई पहल के आधार पर समय बीतने के साथ, जैसे-जैसे हम स्मार्टफोन, टैबलेट आदि से जुड़ते

जा रहे हैं, इन उपकरणों को सीखने के लिए कक्षाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान मिल जाता है। किताबें धीरे-धीरे इलेक्ट्रॉनिक होती जा रही है जिसमें शैक्षिक सामग्री जैसे ऑप्टिकल डिस्क जो पेन ड्राइव में बदलती जा रही हैं। ज्ञान को इंटरनेट के माध्यम से भी साझा किया जा रहा है, जो 24/7, कभी भी और कहीं भी उपलब्ध हो सकती है।

ई-लर्निंग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:-

'ई-लर्निंग" शब्द का प्रयोग (1999) से अस्तित्व में आया है जब यह शब्द पहली बार सीबीटी सिस्टम सेमिनार में उपयोग किया गया था। अन्य शब्द भी सटीक विवरण की तलाश में लगने लगे, जैसे "ऑनलाइन लर्निंग" और "वर्चुअल लर्निंग" इत्यादि इंटरनेट लॉन्च होने से बहुत पहले, छात्रों को विशेष विषयों या कौशल पर शिक्षा प्रदान करने के लिए दूरस्थ पाठ्यक्रम पेश किए जा रहे थे। (1840) के दशक में आइजैक पिटमैन ने अपने विद्यार्थियों को पत्राचार के माध्यम से आशुलिपि सिखाई। प्रतीकात्मक लेखन का यह रूप लेखन की गति में सुधार करने के लिए डिजाइन किया गया था और सचिवों, पत्रकारों और अन्य व्यक्तियों के बीच लोकप्रिय भी थापिटमैन के अनुसार जो एक योग्य शिक्षक थे, उन्हेंने (1924) में, पहली परीक्षण मशीन का आविष्कार किया गया था। इस उपकरण ने छात्रों को खुद का परीक्षण करने की अनुमति दी। फिर, (1954) में, हार्वर्ड के प्रोफेसर बी.एफ. स्किनर ने "शिक्षण मशीन" का आविष्कार किया, जिसने स्कूलों को अपने छात्रों को क्रमादेशित निर्देश देने में सक्षम बनाया। 1960 तक यह नहीं था कि दुनिया में पहला कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया था। यह कंप्यूटर-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम (सीबीटी कार्यक्रम) को स्वचालित शिक्षण कार्यों के लिए प्रोग्राम्ड लॉजिक के रूप में जाना जाता था। यह मूल रूप से विश्वविद्यालय में भाग लेने वाले छात्रों के लिए बनाया गया था, लेकिन पूरे क्षेत्र में स्कूलों में इसका इस्तेमाल किया जा रहा था।

पहले ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली वास्तव में केवल छात्रों को जानकारी देने के लिए स्थापित की गई थी, लेकिन जैसे ही हमने 70 के दशक में प्रवेश किया, ऑनलाइन शिक्षण अधिक इंटरैक्टिव होने लगा। ब्रिटेन में,मुक्त विश्वविद्यालय ई-लर्निंग शिक्षा का लाभ लेने के लिए उत्सुक था। उनकी शिक्षा प्रणाली हमेशा मुख्य

रूप से दूरी पर सीखने पर केंद्रित रही है। अतीत में, पाठ्यक्रम सामग्री डाक द्वारा पहुंचाई जाती थी और मेल के माध्यम से अनुशिक्षक के साथ पत्राचार किया जाता था। इंटरनेट के साथ, ओपन यूनिवर्सिटी ने इंटरेक्टिव परस्पर संवादात्मक शैक्षणिक अनुभवों के साथ-साथ ई-मेल आदि के माध्यम से छात्रों के साथ तेजी से पत्राचार की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करना शुरू किया।

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कंप्यूटर और इंटरनेट की शुरुआत के साथ, ई-लर्निंग शिक्षा के तरीकों का विस्तार हुआ। (1980) के दशक के पहले मैक ने व्यक्तियों को अपने घरों में शिक्षण कार्य रखने के लिए सक्षम किया, जिससे उनके लिए विशेष विषयों के बारे में सीखना और कुछ कौशल सेट विकसित करना आसान हो गया। जिसमें लोगों को ऑनलाइन जानकारी और ई-लर्निंग शिक्षा के अवसरों का खजाना प्राप्त हुआ व अलग-अलग खोजे भी प्राप्त होने लगीं।

भारत में डिजिटल ई-शिक्षा:

भारत में ऑनलाइन शिक्षा के विकास के साथ एक लंबा सफर तय कर रहा है भारत उन राष्ट्रों में से एक है जो प्रौद्योगिकी के संदर्भ में विकसित हो रहा है। 1.3 बिलियन से अधिक की आबादी के साथ, हाई-स्पीड इंटरनेट और स्मार्टफोन की उपलब्धता के कारण, भारत में तकनीकी रूप से संचालित व्यक्तियों की संख्या सबसे अधिक है। इंटरनेट के उदय ने भारत में जीवन के तरीके को बदल दिया है। लोग सब कुछ ऑनलाइन करना पसंद करते हैं, वे ऑनलाइन खरीदारी करते हैं, ऑनलाइन व्यापार करते हैं, ऑनलाइन सीखते हैं आदि जबकि ई-कामर्स सबसे महत्वपूर्ण ऑनलाइन उद्योग, ऑनलाइन शिक्षा और सीखने में है। इंटरनेट पर लगातार बढ़ती जानकारी और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की अनगिनत संख्या के साथ भारत में कई लोग ऑनलाइन सीखना पसंद करते हैं।

भारत में डिजिटल प्रौद्योगिकी की संभावित और अपार लोकप्रियता को देखकर हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने हमारे देश को बदलने और डिजिटल इंडिया पहल के माध्यम से डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके सभी नागरिकों के लिए अवसर पैदा करने की कल्पना की है। पहल में स्वास्थ्य, शिक्षा, श्रम,

रोजगार आदि से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न परियोजनाएं शामिल हैं। डिजिटल इंडिया परियोजना के एक हिस्से के रूप में, कई कॉलेज और विश्वविद्यालय ऑनलाइन पत्राचार पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।

डिजिटल ई-लर्निंग की मुख्य विशेषता :-

- ई-लर्निंग का दिलचस्प हिस्सा केवल सामग्री और उपकरण नहीं है जो शिक्षण के लिए उपयोग किया जाता है, लेकिन वह जिस वातावरण में शिक्षार्थी उसको प्राप्त करना चाहता है उनके प्रशिक्षण पर आधारित हो जाता है
- **हेज एंड हेवर्ड** का समर्थन करते हुए (2004) में ठीक ही कहा- "ई-लर्निंग इलेक्ट्रॉनिक रूप से मध्यस्थता प्रदान करने के लिए एक अभिनव दृष्टिकोण है ई-लर्निंग आजकल न केवल माध्यम है तथा एक बहुत ही सामान्य शब्द है।
- ऑनलाइन ई-लर्निंग सभी विषयों के लोगों के बीच में ई-लर्निंग उच्च और तृतीयक में अभूतपूर्व विस्तार देखा गया है शिक्षा इसके अलावा, आजीवन सीखना पेशेवर के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है
- ई-शिक्षण गतिशील है, वास्तविक समय में संचालित होता जा रहा है। और सशक्त भी यह व्यक्तिगत और व्यापक, प्रभावी और त्वरित का एक संयोजन है
- सामग्री और निर्देशात्मक तरीके जैसे कि मीडिया तत्वों के माध्यम से दिए गए शब्द और व्यक्तिगत सीखने के लक्ष्यों या संगठनात्मक प्रदर्शन से जुड़े कौशल इसलिए यह शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग बन गया है। कंप्यूटर आधारित शिक्षा, वेब आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाओं और डिजिटल पर आधारित शिक्षा शामिल है
- ई-शिक्षा सहयोग जहां सामग्री इंटरनेट, इंट्रानेट या एक्स्ट्रानेट के माध्यम से वितरित की जाती है, जिसमे ऑडियो/वीडियो टेप, उपग्रह टेलीविजन और कॉम्पैक्ट डिस्क (पाटिल 2012) के माध्यम से भी वितरित की जा रही है।

ई-शिक्षा सेवाओं का विकास उस समय हुआ जब पहली बार शिक्षा में कंप्यूटर का इस्तेमाल किया जाने

लगा मिश्रित शिक्षा सेवाओं की तरफ से पढ़ने की एक प्रवृत्ति होती है जहां कंप्यूटर आधारित गतिविधियों को व्यावहारिक या कक्षा आधारित परिस्थितियों के साथ एकीकृत किया जाता है जैसा कि आजकल हम देख रहे हैं कि करोना वायरस के चलते सारी व्यवस्था आव्यवस्थित हो चुकी है इसके साथ-साथ हम सुरक्षित रूप से शिक्षा का इस्तेमाल सुचारु रुप से कर सकते हैं जिसमें शिक्षा के महत्व को और समझा जाने लगा है, करोना वायरस के चलते सभी स्कूल व विद्यालय बंद होने के कारण शिक्षा को सुचारू रूप से चलाया जा रहा है

भारत की ई-शिक्षा के सामाजिक एवं शैक्षिक प्रभाव:

शैक्षिक प्रभाव आजकल हम यह देख रहे हैं कि विश्व भर में महामारी करोना वायरस के चलते शैक्षिक प्रणालियों को प्रभावित किया है जिसमें की ई-शिक्षा में अपना महत्व पुर्ण योगदान दिया है देशभर में महामारी (2019) करोना वायरस के चलते ई-शिक्षा के माध्यम से शिक्षा को विद्यार्थियों तक पहुंचाया जा रहा है विश्व भर में के चलते 2.5 बिलियन से अधिक छात्रों को यह प्रभावित करता है जबकि भारत में 22 मार्च से 31 मई तक देश बंदी के कारण शिक्षण शिक्षा को सुचारू रूप से शिक्षा के माध्यम से चलाया जा रहा है वह जिसमें विद्यालय और विश्वविद्यालय भी शामिल है जो कि आज ई-शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षा को सुचारू रूप से चला रही है

भारत मे सामाजिक परिवर्तन में ई-शिक्षा का योगदान:

विश्व भर में 18 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी (2019) करोना वायरस के प्रकोप के चलते शिक्षा के क्षेत्र में पड़ने वाले असर को ही ई-शिक्षा के माध्यम से विद्यालय, विश्वविद्यालय में अपने सत्र को पूर्ण करने का प्रयत्न किया है जिसमें ई-शिक्षा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को अदा कि है जिसके माध्यम से शिक्षार्थियों तक घर बैठे सुरक्षित रूप से ई-शिक्षा को पहुंचाया जा रहा जा सकता है भारत में महामारी (2019) करोना वायरस कोविड-19 के चलते निम्न स्तर से उच्च स्तर तक के विद्यार्थियों के लिए ई-शिक्षा का प्रावधान किया गया है जिसके माध्यम से सभी विद्यार्थियों को बिना किसी समस्या का सामना किया बिना शिक्षित किया जा रहा है करोना वायरस के सभी स्कूल व विश्वविद्यालय बंद होने के कारण वह अपने

शिक्षा को ई-शिक्षा के माध्यम से ऑनलाइन ग्रहण कर रहे हैं जिससे बिना किसी देरी के शिक्षा को आगे बढ़ाने में मदद मिल रही है शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसमें ई-शिक्षा को विद्यार्थियों तक जोड़े रखा है जिसके माध्यम से सभी विद्यार्थी अपनी समस्याओं को सुविधा पूर्ण रूप से दूर कर रहे हैं

ई-शिक्षा मे लगातार होने वाले वैश्वीकरण

- भारत में 2016 में ऑनलाइन शिक्षा बाजार 247 मिलियन था, जो 2021 तक लगभग 1.96 बिलियन डॉलर बढ़ने की उम्मीद है। यह 52 की एक वार्षिक वार्षिक वृद्धि दर है।
- 2016 में विभिन्न ऑनलाइन शिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए नामांकित उपयोगकर्ताओं की संख्या 1.6 मिलियन होने का अनुमान है, जो 2021 के अंत तक लगभग 9.6 मिलियन बढ़ने की उम्मीद है।
- यह अनुमान लगाया जाता है कि शिक्षा की लागत में175 की वृद्धि हुई है, इससे ऑनलाइन शिक्षा अधिक पसंदीदा है क्योंकि यह लागत प्रभावी है।
- उच्च आकांक्षाओं के साथ 15-40 आयु वर्ग के बीच भारत में लगभग 48 आबादी, लेकिन कम आय ऑनलाइन शिक्षा के लिए एक अच्छा लक्ष्य बाजार बनता जा रहा है और युवा जनसांख्यिकीय में ऑनलाइन चैनल की स्वीकार्यता अधिक होती जा रही है।
- ये कारक भारत में ऑनलाइन शिक्षा की भागीदारी और भविष्य की क्षमता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। अब पारंपरिक शिक्षा पर ऑनलाइन शिक्षा के कुछ फायदे और नुकसान पर चर्चा करते हैं।

साहित्य पुनर्रावलोकन:

स्मार्ट एंड कैपेल, 2006 -इस अध्ययन में, ऑनलाइन शिक्षण को इंटरनेट के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से दिए गए निर्देश के रूप में परिभाषित किया जा सकता है एवं इंटरनेट मल्टीमीडिया प्लेटफार्मों जैसे कि सीडी-रॉम या डीवीडी, गूगल अनएकेडमी, यू-ट्यूब, बाईजी आदि **(स्मार्ट एंड कैपेल, 2006)**। ऑनलाइन शिक्षण या तो तुल्यकालिक रूप से वितरित किया जा सकता है, जहां प्रशिक्षक और छात्रों को एक साथ ऑनलाइन होना चाहिए, या अतुल्यकालिक रूप से, जहां कोई समय प्रतिबंध नहीं है और छात्रों और शिक्षकों को एक ही समय में

ऑनलाइन नहीं होना पड़ता है जो आॅनलाइन शिक्षा पर आधारित नहीं है।

टैनर एट अल (**2009)**- इस अध्ययन में, क्लासिक कक्षा के वातावरण के विपरीत, एक ऑनलाइन वातावरण का होना अनिवार्य है जिससे शिक्षा के माध्यम से शिक्षा को पूर्ण रूप से विकसित एवं प्रसारित किया जा सके।

टान्नर एट अल के अनुसार- ऑनलाइन परिवेश में पढ़ने के लिए संदर्भ के सुराग अधिक कठिन हैं, और पारंपरिक फेस-टू-क्लास कक्षाओं की तुलना में तत्काल डियाडिक संचार अधिक चुनौतीपूर्ण है। किसी भी अन्य शिक्षण माध्यम की तरह, ऑनलाइन शिक्षण में ताकत और चुनौतियां दोनों हैं।

अनुसंधान ने इनमें से कई महत्वपूर्ण शक्तियों का लगातार दस्तावेजीकरण किया है। उदाहरण के लिए, **गीत एट अल (2004)** में पाया गया कि ऑनलाइन प्रौद्योगिकी अधिक से अधिक छात्र प्रतिबिंब के लिए अनुमति दे सकती है और आमने-सामने की कक्षाओं में होने वाली तुलना में अधिक विचारशील और जिम्मेदार टिप्पणी को बढ़ावा दे सकती है। क्योंकि ई-शिक्षा में लचीलापन एवं सुविधा उसकी ताकत है, क्योंकि इसे अक्सर सहयोगी समूहों और शेड्यूल मीटिंग्स में काम करना आसान माना जाता है क्योंकि छात्र इन-पर्सन **(सांग एट अल, 2004)** के बजाय ऑनलाइन मिल सकते हैं। सामग्री, नियंत्रण अनुक्रम, सीखने की गति, समय, और मीडिया, उन कारकों पर नियंत्रण के कारण ऑनलाइन सीखने को व्यक्तिगत और स्व-संगठित बताया गया है, जो शिक्षार्थियों को शिक्षण उद्देश्यों के माध्यम से पूरा करने और सामग्री तक पहुंच का प्रबंधन करने की अनुमति देते हैं।

टैलेंट-रनल्स (2006)- इस अध्ययन में ऑनलाइन लर्निंग जबकि ऑनलाइन सीखने में प्रभावशाली है, एवं यह कई प्रकार की चुनौतियों को भी साथ लाता है। उदाहरण के लिए, **मुलेन** और **टैलेंट-रनल्स (2006)** ने पाया कि ऑनलाइन शिक्षण में छात्रों को स्नेहपूर्ण समर्थन प्रदान करना अधिक कठिन है, जहां "सहायक प्रशिक्षकों से छात्रों को महत्वपूर्ण और मूल्यवान व्यक्ति" के रूप में भावात्मक समर्थन को परिभाषित किया गया जाता है जिससे तकनीकि चुनौतियों को स्पष्ट किया जा सके।

मुइलेनबर्ग और बर्ज (2005)- प्रस्तुत अध्ययन में ऑनलाइन सीखने वाले छात्रों के लिए सबसे महत्वपूर्ण बाधा के रूप में सामाजिक संपर्क की कमी की पहचान भी की है जिसमें प्रशासनिक और प्रशिक्षक के मुद्दों, अध्ययन के लिए समय और समर्थन एवं सीखने की प्रेरणा अगले सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं के रूप में बहुत करीब से आई एवं तकनीकी समस्याओं और होती जा रही है।

जिसमें शक्तियों और कमजोरियों के कारण मौजूद हैं जिसमें प्रशिक्षकों और डिजाइनरों को एक बेहतर समझ की आवश्यकता है कि छात्र ऑनलाइन सीखने को कैसे देखते हैं व इस प्रक्रिया को जिस प्रकार समझ रहे हैं। छात्र की धारणाओं की जांच करना प्रशिक्षकों और डिजाइनरों को सूचित भी करता है कि सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी और सहभागिता को कैसे बढ़ावा दिया जाए, जो छात्रों के सीखने और प्रेरणा को प्रभावी ढंग से बढ़ाता है।

यंग और नॉरगार्ड (2006)- इस अध्ययन में, ऑनलाइन लर्निंग कि ''गुणवत्ता और विशेषताओं को सुनिश्चित करने के लिए, संस्थानों और उनके संकाय को अपने छात्रों के ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों की धारणाओं पर पूरा ध्यान देना चाहिए"।

मेयर (2002) ने यह भी सिफारिश की कि गुणवत्ता पर ऑनलाइन शोध छात्र धारणाओं पर ध्यान केंद्रित करे। छात्रों के दृष्टिकोण में इस रुचि ने ऑनलाइन शिक्षण की धारणाओं का मूल्यांकन करने के लिए डिजाइन किए गए कई उपकरणों के विकास के लिए प्रेरित किया है। इस अध्ययन में ऑनलाइन लर्निंग वातावरण में सर्वे कि यह शोधकर्ताओं को बारीक लेंस के साथ ऑनलाइन सीखने के साथ देखने की अनुमति भी देता है क्योंकि यह छात्रों के ऑनलाइन सीखने के नौ अलग-अलग घटकों की धारणाओं को मापता है, जो उन पांच उपकरणों से प्राप्त होते है तथा जिस पर यह आधारित है। इन तत्वों के छात्रों की धारणाओं की जांच करना ऑनलाइन सीखने के वातावरण की अनूठी प्रकृति पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

जानसन (2011)- इस अध्ययन में भाग लेने वाले छात्रों की विशेषताओं को समझने और इन विशेषताओं को प्राप्त होने वाले परिणामों के साथ ई-लर्निंग व ई-शिक्षा की विशेषताओं को प्राप्त होने वाले

परिणामों को प्रभावित किया जा सकता है तथा अध्ययनों में ई-लर्निंग के कई महत्वों को स्पष्ट साझा भी किया है।

काई (2008) के अनुसार यह निर्णय लिया गया कि इन विशेषताओं को ऑनलाइन सीखने की छात्रों की धारणाओं पर उनके प्रभाव की जांच का मूल्यांकन किया जा सकता है।

पियरी और दयमंतिनी (2014)- ने ई-लर्निंग वेब के आधार पर अपने शोध के शैक्षणिक वर्ष में विश्वविद्यालय में शोध का उद्देश्य आई.सी.टी. को बनाना था। आई.सी.टी. के पास सभी उम्र के लोगों के लिए सीखने के अनुभव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है, इसलिए यह एक अवधारणा बन गई है। शोधकर्ताओं ने वेब से ई-लर्निंग और एकत्रीकरण के लिए संक्रमण को विस्तृत करना शुरू कर दिया है। सीखने की प्रक्रिया में सामाजिक नेटवर्क के साथ उन्होंने थिंकटैग स्मार्ट, एक नए वेब व ई-लर्निंग का इस्तेमाल किया। यह सीखने के अवसरों के साथ वेब द्वारा प्रस्तुत सीखने के अवसरों को प्रदान करता है।

फिशर एट अल (2015)- प्रस्तुत लेख के अनुसार उच्च शिक्षा में डिजिटल मीडिया के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसके माध्यम से शोधकर्ता ने पाया गया कि कुछ वर्षों में आवृत्ति वितरण का विस्तृत विश्लेषण इसकी तीव्रता को दर्शाता है। ई-लर्निंग के रुझानों के बारे में वैज्ञानिक चर्चा और सैद्धांतिक तकनीकों की क्षमता के बारे में निष्कर्ष नवाचार पेश किए जा सकते हैं जो विशेष रूप से उन्होंने सीखने के प्रबंधन को दर्शाते हैं। जर्मन उच्च शिक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए ई-लर्निंग, वर्चुअल वर्ल्ड, ई-पोर्टफोलियो, सोशल मीडिया और मैसिव ओपन ऑनलाइन पाठयक्रम को प्रस्तुत किया है।

जूडअप्स (2015)- ने अपने अध्ययन में यह पाया कि ज्ञान प्रबंधन और ई-लर्निंग स्वाभाविक रूप से दोनों विषयों को करीब लाता है तथा एकीकरण का समर्थन भी करता है। मॉडल एनालिसिस ने कई एकीकरण दृष्टिकोणों की पुष्टि भी की है जो कि सीखने के रूप में पहचानी जाने पर आधारित है। फिर भी, ये दृष्टिकोण नहीं हैं प्रोडक्शनवेंयर में लागू किया गया और आवश्यक तकनीकी होने के साथ यह विनिर्देश और आवेदन समर्थन के लिए आवश्यक है।

टैगोर कट्टौआ एट अल- इस अध्ययन में इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट एंड इकोनॉमिक रिसर्च वॉल्यूम 7 (2016) जकॉब्सोन और कैकुला (2015) इस प्रक्रिया में अपने नये दृष्टिकोण को प्राप्त करना है व बेहतर एवं नई तकनीकों का उपयोग से जुड़े लर्निंग एवं ई लर्निंग के भविष्य को समझने का अध्ययन किया है।

जिसका सवाल यह है कि स्वचालित अधिगम सहायता प्रणाली कैसे विकसित हो सकती है। दक्षता और आगे ज्ञान प्रवाह की गुणवत्ता को सहयोग प्रदान करते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि ऑनलाइन के रूप में सूचना प्रणाली का विश्लेषण सीखने कि ज्ञान प्रवाह की गुणवत्ता में सुधार और कार्य-आधारित को आगे बढ़ाने की सिफारिश करना कुशल ज्ञान प्रबंधन प्रौद्योगिकियों के प्रसार के अलावा सीखना भी है। इसके अलावा सीखने की प्रक्रिया में नवाचारों को वास्तविक और सरल होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को यह पता लगाने में मदद मिल सके कि उनके समस्याओं को कैसे हल किया जाए।

शोल्टजैंड कापेसो (2014) और अल्माजाली एट अल (2016), शौनक (2013) ने प्रस्तुतलेखों में- ई-शिक्षा के कारकों की खोज की। लर्निंग दृष्टिकोण जो उद्यम संसाधन नियोजन (ई.आर.पी.) प्रणाली के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। तकनीक स्वीकृति मॉडलका उपयोग करने की स्वीकृति, उपयोगिता और कथित आसानी का आकलन करने के लिए किया। शोधकर्ताओं ने पाया कि ई लर्निंग सिस्टम को कथित सहजता के लिए सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध जा सके तथा इस तरह के निष्कर्षों के रूप में उपयोग और कथित उपयोगिता अन्य अध्ययनों के महत्व पर जोर देती है ई-लर्निंग और परियोजनाओं में पाठयक्रम सामग्री की गुणवत्ता महत्वपूर्ण होती है जो नये परिणामों को दर्शाती है।

सिंह और थुरमन 2019 के अनुसार- ऑनलाइन सीखने को एक उपकरण के रूप में कहा जाने लगा है जो शिक्षण सीखने की प्रक्रिया को अधिक छात्र केंद्रित अधिक नवीन और और भी अधिक लचीला बना सकता है। ऑनलाइन सीखने को इंटरनेट एक्सेस के साथ विभिन्न उपकरणों; जैसे मोबाइल फोन, लैपटॉप आदि का उपयोग करके समकालिक या अतुल्यकालिक वातावरण में सीखने के अनुभव के रूप में परिभाषित किया गया

है। इन वातावरणों में छात्र प्रशिक्षकों और अन्य छात्रों के साथ सीखने और बातचीत करने के लिए कहीं भी स्वतंत्र हो सकते हैं

राजशेखरन और अरुलचेलावन (2015) के अनुसार- ई-लर्निंग में विजुअल्स की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। मीडिया कम्युनिकेशन को तमिलनाडु में उद्देश्य पता लगाना था मीडिया संचार पाठ्यक्रमों में दृश्य प्रभावशीलता के साथ निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका की खोज करना व ई-लर्निंग सामग्री के बारे में जागरूकता के लिए बेहतर शिक्षण सबसे महत्वपूर्ण कारक था, जिसके बाद ई-लर्निंग द्वारा ज्ञान और उपयोगकर्ता के अनुकूल अध्ययन करने के लिए उपयोग किया जाता है। सीखने में रुचि रखना व सीखने का अन्वेषण करें जैसे सीखने का विचार एक शिक्षक और किताब के साथ कक्षा में बैठने की तुलना में कंप्यूटर द्वरा ई-लर्निंग को किसी भी समय और कहीं भी सुलभ रूप से सीख सकते है ई-लर्निंग पद्धति ने छात्रों को अधिक बुद्धिमान बनाया जा रहा है पारंपरिक आमने सामने शिक्षण पद्धति की तुलना में मीडिया कला और डिजाइन विषयों की दृश्यों पर आधारित ई-लर्निंग से आसान सीखने पर ध्यान अवधारण स्तर और उच्चतर हो सकता है

अध्ययन के उद्देश्य:

1) भारत की उच्च शिक्षा व्यवस्था में ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2) उच्च शिक्षा में ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग को ग्रहण करने में उत्पन्न होने वाली बाधाओं का अध्ययन करना।
3) ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग शिक्षा द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का उच्च शिक्षा व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
4) उच्च शिक्षा प्रणाली में ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग शिक्षा में उपयुक्त होने वाले साधनों एवं माध्यमों का अध्ययन करना।
5) उच्च शिक्षा व्यवस्था में ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग शिक्षा के विकास में सरकारी प्रयासों का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना

1 शिक्षा व्यवस्था में ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग शिक्षा की पृष्ठभूमि अत्यधिक नवीन है।

2 वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में ई-शिक्षा व ई-लर्निंग शिक्षा के ग्रहण करने में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है।

3 ई-शिक्षा व ई-लर्निंग शिक्षा के ग्रहण करने में कई प्रकार की बाधाओं व चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

4 उच्च शिक्षा प्रणाली में ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग शिक्षा के अनेक माध्यमों एवं संसाधनों का उपयोग व महत्व बढ़ता जा रहा है।

5 भारतीय सरकार द्वारा ई-शिक्षा व ई-लर्निंग शिक्षा के विकास में सरकारी विभागों मे डिजिटल शिक्षा को ग्रहण किया जा रहा है ।

शोध पद्धतिशास्त्र- शोध पद्धतिशास्त्र एक शोध समस्या को व्यवस्थित रूप से हल करने का एक तरीका है जिसके माध्यम से वैज्ञानिक रूप से शोध करना है जिसका उपयोग अनुसंधान के संचालन के लिए किया जाता है। शोध पद्धति में निर्देशन शोध पद्धति को अपनाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आगरा नगर के उच्च शिक्षण संस्थानों का अध्ययन किया जाएगा।

तालिका संख्या-1, आगरा के उच्च शिक्षण संस्थान

शिक्षण संस्थान का नाम	**वर्ग**	**स्नातक**	**परास्नातक**
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीटयूट	कला	30	25
	विज्ञान	30	25
आगरा कालेज आगरा	कला	30	20
	विज्ञान	25	15
राजा बलवंत सिंह डिग्री कालेज	कला	20	15
	विज्ञान	15	15
बी.डी. जैन गर्ल्स डिग्री कालेज	कला	20	20
	विज्ञान	-	-
बकुंठी देवी गर्ल्स डिग्री कालेज	कला	25	20
	विज्ञान	20	15
	योग	215	170

शोध प्रंरचना -

प्रस्तावित अध्ययन में अनुसंधान की व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

शोध अध्ययन क्षेत्र व समग्र

शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तन के बदलते आयामों में शिक्षा का योगदान का (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र में आगरा को अपना शोध अध्ययन क्षेत्र माना है आगरा नगर के में स्थापित उच्च शिक्षा का माध्यम दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीटयूट, डीम्ड विश्वविद्यालय, (दयालबाग आगरा), आगरा कालेज आगरा, राजा बलवंत सिंह डिग्री कॉलेज, बी.डी. जैन गर्ल्स महाविद्यालय, बैकुंठी देवी गर्ल्स महाविद्यालय मेरे अध्ययन केंद्र रहेंगे।

निदर्शन

जिसमें शिक्षण संस्थानों की अनुमानित कुल संख्या 2500 है जो अध्ययन के समग्र की रचना करती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी द्वारा निदर्शन का प्रयोग कर इकाईयों का चयन कर अध्ययन को निश्चित किया जाना है जिसके लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन व देव निदर्शन विधि के द्वारा लगभग 450 इकाईयों का चयन किया जायेगा तथा प्रत्येक संस्थान से लगभग 90 इकाई को चयन किया जायेगा।

तथ्यों संकलन के स्त्रोत

प्रस्तावित शोध को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों प्रकार के स्त्रोतों का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तावित शोध को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्त्रोतों का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक स्त्रोतों के अंतर्गत तथ्य समापन के लिए विषय से संबंधित विशेषज्ञों और छात्रों के साथ-साथ महाविद्यालय विश्वविद्यालय के साक्षात्कार भी लिए जाएंगे। द्वितीयक स्रोत में प्रमुख रूप से पुस्तकें प्रकाशित आलेख, जर्नल्स, ई-जर्नल इत्यादि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन संयत्र

तथ्य संकलन हेतु अध्ययन संयत्र के रूप में अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग करने का निश्चय किया जायेगा।

अध्ययन शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के संयत्र के रूप में कई वर्ग परीक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

तथ्यों का सम्पादन एवं संकेतन

तथ्यों का सम्पादन एवं संकेतन तथ्यों को क्रमबद्ध करना, उन्हें व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करना तथ्यों का सम्पादन कहलाता है। अतः संकलित तथ्यों का सम्पादन कर उनका संकेतन भी किया जायेगा।

तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन, विश्लेषण एवं सामान्यीकरण

संकलित तथ्यों को उनकी समानता एवं असमानता के आधार पर विभिन्न वर्गा में वर्गीकृत कर उनको सारणियों में प्रदर्शित किया जायेगा, तत्पश्चात उनका विश्लेषण किया जायेगा व अन्त में निष्कर्षा का सामान्यीकरण किया जायेगा।

प्रस्तावित अध्ययन सूची

प्रथम अध्याय

- प्रस्तावना
- समस्या कथन
- अध्ययन का महत्व
- संबंधित साहित्य का पुनर्वालोकन
- शोध उद्देश्य
- शोध परिकल्पना

द्वितीय अध्याय

- शोध पद्धतिशास्त्र
- शोध अभिकल्प
- शोध अध्ययन क्षेत्र
- निदर्शन
- अध्ययन संयत्र
- अध्ययन शोध प्रविधि
- तथ्यों का संकलन
- तथ्यों का संपादन एवं संकेतन
- तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीयन, विश्लेषण एवं सामान्यीकरण

तृतीय अध्याय

भारत की उच्च शिक्षा व्यवस्था में ई शिक्षा एवं ई-लर्निंग शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।

चतुर्थ अध्याय

उच्च शिक्षा में ई शिक्षा एवं एवं ई-लर्निंग को ग्रहण करने में उत्पन्न बाधाओं का अध्ययन।

पंचम अध्याय

- ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का उच्च शिक्षा व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- ई-शिक्षा एवं ई-लर्निंग में उपयुक्त होने वाले साधनों एवं माध्यमों का अध्ययन।

षष्ठ अध्याय

ई-शिक्षा व ई-लर्निंग के विकास में सरकारी प्रयासों का अध्ययन।

सप्तम अध्याय

- निष्कर्ष
- संदर्भ ग्रन्थ सूची

<u>संदर्भ सूची</u>

1) A. S. Drigas, A. Tagoulis, P. Kyragianni, P. Nikolopoulos, D. Kalomoirakis, and et al., “An E-learning Platform for Multiform and Interactive Education of Scholars in Greek Paleography,” Proc. ACM Symp. International Conference on Distance Learning and Web Engineering, ACM Press, Aug. 2005, pp. 90-94.

2) S. S. Liaw, H. M. Huang, and G. D. Chen, “Surveying Instructor and Learner Attitudes Toward E-learning,” Computers & Education, vol. 49, Aug. 2005, pp. 1066-1080.

3) P. C. Sun, R. J. Tsai, G. Finger, Y. Y. Chen, and D. Yeh, “What Drives a Successful E-learning? An Empirical Investigation of the Critical factors Influencing Learner Satisfaction,” Computers & Education, vol. 50, Nov.2006, pp.

4) H. McVeigh, “Factors Influencing the Utilisation of E-learning in Post-registration Nursing Students,” Nurse Education Today, vol. 29, Jul. 2008, pp. 91-99.

5) B. J. Zimmerman, “Investigating Self-Regulation and Motivation: Historical Background, Methodological Developments, and Future Prospects,” American Educational Research Journal, vol. 45, May 2008, pp. 166-184, doi: 10.3102/0002831207312909

6) Z. Y. Ying, Z. S. Dong, and D. Xin, “ZigBee-based Design of Data Acquisition System,” Journal of Ningbo University (NSEE), vol. 22, Sep.2009, pp. 313-316

7) Y. H. Zhen, S. X. Hua, and L. L. Hua, “PLC Experimental Teaching Platform Based on Configuration Technology,” Journal of Ningbo University (NSEE), vol. 23, Jan. 2010, pp. 42-45.

8) F. D. Cerbo, G. Dodero, and L. Papaleo, “Integrating a Web3D Interface into an E-learning Platform,” Proc. ACM Symp. International Conference on Web 3D Technology (Web3D 10), ACM Press, Jul. 2010, pp. 83-92, doi: 10.11451/1836049.1836062.

9) Azimi, H. M. Readiness for Implementation of E-Learning in Colleges of Education. Journal of Novel Applied Sciences. 2013; 769-775.

10) Kebritchi M., Lipschuetz A., Santiague L. (2017). Issues and challenges for teaching successful online courses in higher education. *Journal of Educational Technology Systems,* 46(1), 4–29. [Google Scholar]

11) Keeton M. T. (2004). Best online instructional practices: Report of phase I of an ongoing study. *Journal of Asynchronous Learning Networks*, 8(2), 75–100. [Google Scholar]

12) Ayebi-Arthur K. (2017). E-learning, resilience, and change in higher education: Helping a university cope after a natural disaster. *E-Learning and Digital Media,* 14(5), 259–274. 10.1177/2042753017751712 [CrossRef] [Google Scholar]

Websites

- http://www.columbia.edu/itc/mwalac/pritchett:
- http://varnam.org/blog/2007/08/the_story_behind:
- http://wikipedia.org/wiki/central_Board:
- https://web.archive.org/web/20081231235835
- http://www.dise.in/ar2005.html
- http://www.slideshare.net/siddharth4mba/women-education-in-
- https://eduxpert.in/online-education-india/
- https://eduxpert.in/wp-content/uploads/2018/09/facts-about-online-education-in-india-410x1024.png
- https://www.ncbi.nlm.nih.gov/
- https://hindi.theindianwire.com/